B.A. Part-I (Hindi Comp.)
I Paper

डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

प्रश्न: जयशंकर प्रसाद की काव्य-साधना पर प्रकाश डालिए।
या
जयशंकर प्रसाद की कविताओं के भाव-पक्ष पर प्रकाश डालें।

उत्तर: छायावाद के प्रमुख स्तंभ जयशंकर प्रसाद कविताओं में प्रकृति के सुरम्य चित्रों का आकर्षक रूप-रेखा प्राप्त होती है। शुरू में प्रसाद जी ब्रजभाषा में काव्य रचना किया करते थे। बाद में महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रभाव से खड़ी बोली में भी रचना करने लगे। प्रसाद जी संस्कृत साहित्य के प्रेमी थे। अतः उनकी भाषा में तत्सम शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में मिलता है। उन्होंने ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ अपनी रचनाओं में भारतीय दर्शन का पुट देकर अपने काव्य को अधिक गंभीर बना दिया। उनकी शैली का प्रधान गुण है भाषा में उतार-चढ़ाव। 'झरना' 'आँसू', भारत महिमा में भाषा के इस उतार-चढ़ाव को देखा जा सकता है। जिस प्रकार उनके काव्य में करुणा की रागिनी बजती है उसी प्रकार उनकी भाषा में भी करुणा की छाप है। छंदों के प्रयोग में इन्होंने शास्त्रीय पद्धति को छोड़ा भी है। भावों की अभिव्यक्ति में चित्रात्मकता का ध्यान रखा है। इनकी शैली एक आनंदवादी चिंतक की है। इनकी शैली में सरलता, सांकेतिकता एवं ऐश्वर्य का प्रभाव देखने को मिलता है।

इनकी प्रारंभिक कृतियों में चित्राधार, कानन-कुसुम, प्रेम-पथिक व महाराणा का महत्व आदि है। विकास क्रम की दृष्टि से 'झरना', 'लहर', 'आँसू', आदि कविता संग्रह बाद में आए। 'कामायनी' खड़ी बोली का उत्कृष्ट महाकाव्य है। इस काव्य में भारतीय संस्कृति और दर्शन को पौराणिक आख्यान के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इन्होंने अंतर्मन की गहराइयों में पैठकर श्रद्धा, इड़ा और मानव की कहानी प्रस्तुत की है। भारतीय दर्शन की प्रतिष्ठा एवं गौरव पूर्ण भाषा-शैली और प्रतीक योजना की दृष्टि से यह हिन्दी काव्य-धारा की महत्तम उपलब्धि है। प्रसाद की कविताओं की शैली का यह गौरव नवीन ढंग के प्रयोग और संधान उपलब्ध करवाते हैं।

प्रसाद जी की कविताओं में राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी है। 'लहर' नामक संग्रह में शेर सिंह का

P.T.O

आत्म समर्पण, पेशोला की प्रतिध्वनि, अशोक की चिंता, आदि कविताओं में उनकी राष्ट्रीय भावना की झलक मिलती है। अरुण इतिहास के दरवाजे पर पाँव रखकर उन्होंने देश के अतीत के उन चित्रों को उभारने का प्रयास किया जो युग-युग के अनेकानेक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है। इनकी राष्ट्रीय भावना का व्यापक और पुष्ट परिचय उनके नाटकों में मिलता है। इनके गीतों में भारत के दिव्य दर्शन होते हैं।

छायावादी कवि होने के कारण इनकी कविताओं में प्रकृति की अनुपम छटा दिखलाई पड़ती है। उनमें स्वच्छंद प्रकृति, अपरूप सौंदर्य, मनमोहक कल्पना और कोमल भाव दिखलाई देते हैं। वहीं पर सजग, सक्रिय, सचेतन और स्वस्थ उल्लास है। इनमें दर्शन का गूढ़ रहस्य है। अध्यात्म की पवित्र संस्कृति है। मानव मन कल्पना का स्वच्छंद अतिरेक है। इसमें विश्व वेदना की झंकृति सुनाई पड़ती है। उसमें भावात्मक प्रसार की शक्ति, जिसके सहारे वह मानव जीवन की चिरंतन समस्याओं का समाधान है। प्रसाद की कविताओं में प्रकृति के चित्रों में व्यापक वैविध्य एवं आकर्षक झलक है।

प्रसाद के काव्य के अनुशीलन में जो पहली वस्तु आती है वह है उनका सूक्ष्म सौंदर्य-बोध। सौंदर्य को परिभाषित करते हुए स्वयं कवि ने कहा था —

उज्ज्वल वरदान चेतना का
सौंदर्य जिसे सब कहते हैं।

इसी सौंदर्य में प्रकृति का सौंदर्य भी घुल मिलकर जीवन्त हो जाता है। इसलिए वह शारीरिक सौंदर्य, मांसल व भौतिक न होकर सूक्ष्म और वायवीय हो जाता है। उनका सौंदर्य कनक किरण के अंतराल में लुक-छिप कर चलने वाला है। वह लाज भरा सौंदर्य आज भी अधरों में राग की लाली रखता है। उसकी पलकों में खुमार और रेशमी डोर है। अलकों में मलयज बंद है। अधर रूपी मधुर कगारों में जब-जब कल-कल की ध्वनि गूँजती है तब उस ध्वनि में वह आकर्षण विद्यमान है। वे अधर स्वयं ही अपनी मधुर छाया से तरल हँसी पीते हैं। प्रसाद के काव्य में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का प्रबल स्वर है। वे मानते हैं कि हिमालय के प्रांगण में सर्वप्रथम ज्ञान एवं जागृति का उपहार भारत को ही दिया था।

P.T.O

इनकी प्रारंभिक कविताओं में परंपरागत कवित्त छंदों का ही अधिक प्रयोग हुआ है किंतु भाव और अभिव्यंजना की दृष्टि से यह छायावाद की पूर्वपीठिका प्रस्तुत करती है। प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। इनके कविता संग्रह चित्राधार, करुणालय, लहर, आँसू और कामायनी हैं। इनके प्रारंभिक ग्रंथों में जहाँ शिल्प और भाषा-शैली की दृष्टि से द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता स्पष्ट देखी जा सकती है, वहीं इन काव्यों में यत्र-तत्र नवीन छायावादी काव्य के भी दर्शन होते हैं। परंतु जिन कविता संग्रह ने प्रसाद जी को अग्रगण्य कवियों में स्थान दिया वे निश्चय ही 'कामायनी' 'लहर और आँसू' थी।

प्रसाद के काव्य में प्रेम करुणा और सौंदर्य है। उनके भीतर हम जीवन के चित्र देख सकते हैं। वे भारतीय संस्कृति के प्रबल पंडित थे। अतः देश-प्रेम के साथ आर्य-गौरव भावना की झलक भी इनकी कविताओं में देखने को मिलता है। उनका देश-प्रेम एक बौद्धिक वस्तु मात्र न था। उसमें उनकी आत्मा का रस मिला हुआ था। भारत के प्राचीन गौरव का गान कवि ने बड़े सुंदर शब्दों में किया है। प्रसाद का प्राचीन भारत वही है जो संसार का सर्वप्रथम देश है जहाँ विद्वानों ने सर्वप्रथम भारत के दर्शन किए।

U.G. B.A. Part-I
Hindi (comp)
'Prasad Ki Kavya sadhna'